Call For Contributions for the College Magazine: *Voice Abhivyakti*

The Indian Knowledge System (IKS) stands as a beacon of India's rich cultural heritage, seamlessly bridging ancient wisdom with modern education. Our civilisation is unique in its access to and practice of knowledge produced in the ancient Bharat. Bharatiyas meticulously developed, perfected, and disseminated knowledge in a range of fields such as arts, architecture, agriculture, medicine, metallurgy, and so on over millennia. This knowledge was comprehensive, intellectually rigorous, and practically viable because it was intimately in tune with the way of life of people. Established under the Ministry of Education (MoE) at AICTE, New Delhi, Indian Knowledge System (IKS) promotes interdisciplinary research, preserves India's vast repository of knowledge, and disseminates it for societal applications. Rooted in the philosophy that a nation's or individual's character is deeply tied to cultural affinity.

This legacy finds its echoes in the illustrious universities of ancient India—Nalanda, Takshashila, and Vikramashila—centers of learning that embraced holistic and multidisciplinary education. These institutions welcomed scholars from diverse backgrounds, including women and international students, and offered an expansive curriculum covering philosophy, astronomy, medicine, fine arts, and statecraft. The guiding principles of *Vasudhaiva Kutumbakam* (the world is one family) and *Sarve Bhavantu Sukhinah* (may everyone be happy) further enriched this knowledge framework, reinforcing the ideals of global harmony and integral human development.

In contemporary times, the National Education Policy (NEP) 2020 has brought transformative changes by integrating IKS into the modern curriculum. The policy acknowledges the invaluable contributions of IKS to education and emphasizes its potential to foster holistic development. The essence of IKS, however, extends beyond preservation—it is a living philosophy that nurtures critical thinking, ethical leadership, and a profound sense of cultural pride. It is not merely about looking back but about moving forward, harnessing the depth of ancient wisdom to build a future that is innovative, inclusive, and sustainable. It is about ensuring that knowledge is not just accumulated but also applied meaningfully, shaping individuals who lead with integrity and purpose.

The Indian Knowledge Systems (IKS) can therefore be sustained and be of use to the generations to come. In this context, the theme of the 2025 edition of the college magazine is "Indian Knowledge Systems." We invite students to explore this vast intellectual tradition through creative and thought-provoking pieces that engage with questions such as: What is knowledge according to ancient Indic traditions? How does knowledge emerging from such a culture stand apart? What are the varied connotations of knowledge? What is the true value of knowledge, and to what end should it be applied? How can ancient wisdom be harnessed to solve modern-day

challenges? In what ways do creative fields underscore the fragility or resilience of IKS? How do art, literature, and music serve as vehicles for preserving and disseminating IKS?

We welcome original contributions in Hindi, Sanskrit, English, and German in the form of poetry, short stories, diary entries, essays, and articles.

Entries should be emailed to-
English- riya.chaudhary@gargi.du.ac.in
Hindi- krishna.meena@gargi.du.ac.in
Sanskrit- mamta.tripathi@gargi.du.ac.in
German- Rima.Chauhan@gargi.du.ac.in

Submission deadline- **25th February 2025**

Students are required to mention their **full name, course, and year** in the submission file.

भारतीय ज्ञान प्रणाली (इंडियन नॉलेज सिस्टम)

भारतीय ज्ञान प्रणाली (इंडियन नॉलेज सिस्टम) भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक है, जो प्राचीन ज्ञान और आधुनिक शिक्षा के बीच एक सेतु का कार्य करती है। हमारी सभ्यता प्राचीन भारत में सृजित और विकसित ज्ञान को अपनाने और उसका अभ्यास करने में विशिष्ट रही है। भारतवासियों ने कला, वास्तुकला, कृषि, चिकित्सा, धातु विज्ञान आदि जैसे विविध क्षेत्रों में सहस्राब्दियों तक ज्ञान का विकास, परिष्करण और प्रचार किया। यह ज्ञान व्यापक, बौद्धिक रूप से समृद्ध और व्यावहारिक रूप से प्रभावी था, क्योंकि यह लोगों के जीवन शैली से गहराई से जुड़ा हुआ था। भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद, नई दिल्ली में स्थापित भारतीय ज्ञान प्रणाली (इंडियन नॉलेज सिस्टम) बहुविषयक अनुसंधान को प्रोत्साहित करता है, भारत के व्यापक ज्ञान भंडार का संरक्षण करता है और इसे सामाजिक उपयोग के लिए प्रसारित करता है। इस विचार पर आधारित है कि राष्ट्र या व्यक्ति का चरित्र उसकी सांस्कृतिक पहचान से गहरे तौर पर जुड़ा होता है, भारतीय ज्ञान प्रणाली एकता और भाईचारे की भावना को बढ़ावा देती है, जो राष्ट्र को विभिन्न चुनौतियों का सामना करने के लिए मजबूत बनाती है।

इस विरासत की झलक हमें नालंदा, तक्षशिला और विक्रमशिला जैसी प्राचीन भारतीय विश्वविद्यालयों में मिलती है, जो समग्र और बहु-विषयक शिक्षा के केंद्र थे। ये संस्थान विविध पृष्ठभूमि के विद्वानों, महिलाओं और अंतरराष्ट्रीय छात्रों का स्वागत करते थे और दर्शन, खगोलशास्त्र, चिकित्सा, ललित कला और राजनीति शास्त्र जैसे विषयों का विस्तृत पाठ्यक्रम प्रदान करते थे। वसुधैव कुटुंबकम् (संपूर्ण विश्व एक परिवार है) और सर्वे भवंतु सुखिनः (सभी सुखी हों) जैसे सिद्धांतों ने इस ज्ञान प्रणाली को और अधिक समृद्ध बनाया, जिससे वैश्विक सौहार्द और समग्र मानव विकास के आदर्शों को बल मिला।

आधुनिक समय में, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (नेशनल एजुकेशन पॉलिसी) 2020 ने इंडियन नॉलेज सिस्टम को आधुनिक पाठ्यक्रम में एकीकृत कर शिक्षा प्रणाली में क्रांतिकारी बदलाव किए हैं। यह नीति भारतीय ज्ञान प्रणाली के अमूल्य योगदान को मान्यता देती है और इसके समग्र विकास में इसकी प्रभावी भूमिका पर जोर देती है। नई शिक्षा नीति (राष्ट्रीय शिक्षा नीति) 2020 इस सतत ज्ञान परंपरा के संरक्षण के महत्व को रेखांकित करती है और इसे आधुनिक शैक्षिक पाठ्यक्रम में शामिल करने की आवश्यकता पर जोर देती है।हालांकि, भारतीय ज्ञान प्रणाली का उद्देश्य मात्र संरक्षण तक सीमित नहीं है—यह एक जीवंत दर्शन है, जो विश्लेषणात्मक सोच, नेतृत्व क्षमता और सांस्कृतिक गौरव की भावना को विकसित करता है। यह केवल अतीत की ओर देखने तक सीमित नहीं, बल्कि भविष्य की दिशा में बढ़ने, प्राचीन ज्ञान की गहराई से सीख लेकर एक नवाचारपूर्ण, समावेशी और सतत भविष्य के निर्माण पर केंद्रित है। इसका उद्देश्य केवल ज्ञान का संकलन नहीं, बल्कि उसके सार्थक अनुप्रयोग के माध्यम से ऐसे व्यक्तियों का निर्माण करना है, जो सत्यनिष्ठा और उद्देश्य के साथ नेतृत्व करें।

इस प्रकार, भारतीय ज्ञान प्रणाली (इंडियन नॉलेज सिस्टम) को निरंतर बनाए रखा जा सकता है और आने वाली पीढ़ियों के लिए उपयोगी बनाया जा सकता है। इसी संदर्भ में, 2025 के कॉलेज पत्रिका का विषय

"भारतीय ज्ञान प्रणाली" निर्धारित किया गया है। हम छात्रों को इस विशाल बौद्धिक परंपरा का अन्वेषण करने और इसे रचनात्मक एवं विचारोत्तेजक लेखों के माध्यम से प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित करते हैं। संभावित विषयों में शामिल हैं: प्राचीन भारतीय परंपराओं के अनुसार ज्ञान क्या है? ऐसी संस्कृति से उत्पन्न ज्ञान की क्या विशेषताएँ हैं? ज्ञान के विभिन्न अर्थ और उसकी वास्तविक उपयोगिता क्या है? ज्ञान को किस उद्देश्य से लागू किया जाना चाहिए? प्राचीन ज्ञान को आधुनिक समस्याओं के समाधान के लिए किस प्रकार उपयोग में लाया जा सकता है?रचनात्मक क्षेत्र किस प्रकार भारतीय ज्ञान प्रणाली (इंडियन नॉलेज सिस्टम) की संवेदनशीलता या दृढ़ता को प्रदर्शित करते हैं? कला, साहित्य और संगीत भारतीय ज्ञान प्रणाली (इंडियन नॉलेज सिस्टम) को संरक्षित करने और प्रचारित करने के माध्यम के रूप में कैसे कार्य करते हैं?

हम हिंदी, संस्कृत, अंग्रेज़ी और जर्मन में मौलिक रचनाएँ आमंत्रित करते हैं, जिनमें कविता, लघु कथाएँ, डायरी प्रविष्टियाँ, निबंध और लेख शामिल हैं।

प्रस्तुतियाँ भेजने के लिए:

अंग्रेज़ी: riya.chaudhary@gargi.du.ac.in
हिंदी: krishna.meena@gargi.du.ac.in
संस्कृत: mamta.tripathi@gargi.du.ac.in
जर्मन: Rima.Chauhan@gargi.du.ac.in